ॐ

विश्व हिन्दू परिषद

केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल उपवेशन

प्राचीन श्रीराम मंदिर, ऋषिकेश रोड, भूपतवाला, हरिद्वार

ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी–अष्टमी, संवत् 2072 विक्रमी, 25–26 मई, 2015

प्रस्ताव क्र0–1– गंगा की अविरलता ही गंगा की निर्मलता और रक्षा का एकमेव मार्ग है।

पतित पावनी माँ गंगा आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक तीनों ही दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। भारत में गंगा के आध्यात्मिक अधिष्ठान को कोई समाप्त नहीं कर सकता। गंगा केवल हाइड्रोजन आक्सीजन का मिश्रण नहीं है, अपितु भारतीयों की माँ हैं। संसार में गंगाजल ही ऐसा जल है जिसमें आत्मशुद्धि का गुण सहज रूप में विद्यमान है, इसी कारण गंगाजल की कोई एक्सपायरी डेट (Expiry Date) नहीं है। हम विकास के विरोधी नहीं है, लेकिन विनाश करके किया गया विकास भी किसी को अभीष्ट नहीं है। गंगा किसी शासन व्यवस्था की भी देन नहीं है अपितु भगवद् प्रदत्त धरोहर है जिसकी रक्षा करना हम सबका राष्ट्रीय कर्त्तव्य है।

भारत में जन्म लेने वाला कोई भी व्यक्ति, चाहे सम्पन्न हो अथवा विपन्न, किसी भी वर्ण, जाति, सम्प्रदाय का हो अथवा शासन–प्रशासन व्यवस्था का अंग हो, वैज्ञानिक, इंजीनियर अथवा विधिक्षेत्र का विशेषज्ञ हो वह भारत में सतत् प्रवाहमान् माँ गंगा एवं अन्य भारतीय सरिताओं के महत्व से अनवगत नहीं है।

मल्लाह, माली, नापित, तीर्थपुरोहित, कृषक, व्यापारी एवं उद्यमी सभी का जीवन बिना किसी भेदभाव के गंगा पर निर्भर है। जन्म से मृत्यु पर्यन्त हमारा सम्बन्ध गंगा से है। गंगा भारत की जीवन रेखा है और सदानीरा है और प्राण रेखा के साथ कोई खिलवाड़ नहीं करता, अतः गंगा के साथ भी कोई खिलवाड़ नहीं होनी चाहिए।

''जल ही जीवन है'' ऐसा कहकर भविष्य में पैदा होने वाले जल संकट के प्रति समाज को आगाह करने वाले विद्वानों को यह भी याद रखना चाहिए कि जल में भी जीवन है।

इस सत्य को भी सभी ने स्वीकार करना चाहिए कि एक मात्र गोमुख से निकली भागीरथी कि धारा ही गंगा नहीं है अपितु अलखनंदा, मंदाकिनी, भीलंगना सरीखी अनेक सहायक सरिताओं और असंख्य जलस्रोतों को समन्वित स्वरूप ही गंगा है। शास्त्रों में गंगा को ''ब्रह्मद्रवा'' कहा गया है। गंगा के अस्तित्व की रक्षा के लिए आवश्यक है कि उपर्युक्त सम्बन्धित किसी भी धारा को अवरुद्ध न किया जाये।

सरकार की नमामि गंगे योजना स्तुत्य है। परन्तु केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल का यह दृढ़ मत है कि गंगाधारा की अविरलता के बिना निर्मलता प्राप्त करना असम्भव है। नमामि गंगे योजना के सार्थक और सकारात्मक परिणाम के लिए आवश्यक है कि (1) गंगा को परिभाषित किया जाये। (2) गंगोत्री से जितनी मात्रा में जल प्राप्त होता है उतनी ही मात्रा में जल गंगासागर तक के लगभग 2550 किलोमीटर के सम्पूर्ण प्रवाह मार्ग पर प्राप्त होना चाहिए। (3) सीवर, शहर व उद्योगों से निकलने वाले दूषित पानी को शुद्ध करके उसे सिंचाई तथा उद्योगों के

उपयोग के लिए दिया जाये तथा गंगा से केवल पीने के लिए पानी लिया जाये। आज हरिद्वार से नहर के माध्यम से गंगाजल सिंचाई, उद्योग और पेय हेतु तीनों के लिए लिया जाता है और इसकी क्षतिपूर्ति दूषित पानी को शुद्ध करके पुनः गंगा की धारा में डालकर की जाती है। आज की इस दोषपूर्ण व्यवस्था को बदलना चाहिए।

गंगोत्री से गंगासागर तक गंगा तटवर्ती तीर्थ एवं घाटों की सुन्दरता, पवित्रता और स्वच्छता सुनिश्चित करने के साथ–साथ प्रत्येक घाट एवं तीर्थ पर गंगा का प्रवाह भी सुनिश्चित किया जाये। वर्षाकाल में गंगा के प्रवाह में बड़ी मात्रा में बालू, पत्थर (River bed material) घाटों पर जमा हो जाते है। वर्षाकाल समाप्त होने के बाद इस RBM को हटाया जाये ताकि घाटों पर स्नान के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध हो सके।

गंगा में व्यासी से लेकर लक्ष्मणझूला तक प्रतिदिन हजारों तरुण युवक युवतियाँ Rafting करते हैं, अश्लील हरकतें करते हैं, शराब पीते हैं, प्रतिदिन गंगातट से शराब की हजारों बोतलें एकत्र की जाती हैं। गंगातट पर सन्त–महात्मा रहते हैं। युवक युवतियों की अश्लील हरकतें देखकर उनको अपनी आँखें बन्द करनी पड़ती है। Rafting से सरकार पैसा कमाती है। इसे बन्द करना चाहिए। गंगा शराब की बोतलों से गन्दी होती है, पूजा के फूल से नहीं। भागीरथ अपनी तपस्या से गंगा को अस्थियों के तर्पण के लिए धरती पर लाए थे, अन्य किसी प्रयोजन से नहीं, यह बात सभी विद्वानों को सदैव ध्यान में रखना चाहिए।

मार्गदर्शक मण्डल जनता जनार्दन से आग्रह करता है कि गंगा के साथ माँ जैसा व्यवहार करें, गंगाघाट की स्वच्छता, गंगा की दैनिक आरती और गंगा में गंदगी न जाने देने का संकल्प ले और उसका दृढ़ता से पालन करें।

दिनांक : 25 मई, 2015

प्रस्तावक :स्वामी वियोगानन्द जी महाराज, गुजरात

समर्थक : आचार्य म0म0 अवधेशानन्दगिरि जी महाराज, अम्बाला

अनुमोदक : स्वामी चिन्मयानन्द जी महाराज, परमार्थ आश्रम, हरिद्वार

साध्वी पूर्णप्रज्ञा माँ, रायवाला, देहरादून

ॐ

विश्व हिन्दू परिषद

केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल उपवेशन

प्राचीन श्रीराम मंदिर, ऋषिकेश रोड, भूपतवाला, हरिद्वार

ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी–अष्टमी, संवत् 2072 विक्रमी, 25–26 मई, 2015

प्रस्ताव क्र0–2 श्वेतक्रान्ति और भारत के गाँव व गरीब किसान के विकास का मूलाधार गोवंश की रक्षा में सन्निहित है

भारतीय ऋषि–महर्षियों द्वारा गऊ को माँ सम्बोधन करके सर्वोपरि महत्व प्रदान किया गया है। ''गावो विश्वस्य मातरः'' सूत्र की व्याप्ति बहुत विशाल है। गोमाता केवल मनुष्य का ही नहीं तो जीव मात्र का रक्षण करती है फिर भी स्वतंत्र भारत में गऊ एवं गोवंश का विनाश निरन्तर जारी है। यद्यपि अनेक प्रान्तों ने गोरक्षा के कानून बनाये है तथापि बनाये गये कानूनों का प्रामाणिकता के साथ पालन न होने के कारण गोवंश की संख्या निरन्तर घट रही है, इसके दुष्परिणाम आजादी के 68 वर्ष बाद सर्वत्र अनुभव हो रहे है। हमारी खेती गोवंश आधारित न रहकर मशीन आधारित हो गई है, जैविक खाद के स्थान पर रसायन का प्रयोग बढ़ गया। रासायनिक खाद, रासायनिक कीटनाशक, के कारण कृषि भूमि बंजर हुई, पानी की खपत बढ़ी है, अधिक पानी के लिए धरती से पानी का शोषण हुआ, बैल के स्थान पर ट्रैक्टर आया, पानी और ट्रैक्टर के लिए डीजल की आवश्यकता पड़ी, डीजल के कारण हम पराश्रित हो गए, भारत की पूंजी देश के बाहर चली गई, देश गरीब होने लगा, इन सबके कारण खेती की लागत बढ़ी, परन्तु किसान को लागत के अनुपात में लाभकारी मूल्य नहीं मिला, बैंक से लिया गया कर्जा किसान वापस नहीं कर सका, परिणामस्वरूप या तो किसान ने खेती छोड़ दी अथवा आत्महत्या कर ली। लगभग तीन लाख किसान आत्महत्या कर चुके हैं, लाखों किसानों ने खेती करना छोड़ दिया है। पानी के शोषण के कारण धरती का जलस्तर नीचे गिर गया, परिणामस्वरूप 250 से अधिक जिले जल के अभाव से जूझ रहे है। रासायनिक खाद व कीटनाशक से कृषि उत्पाद शरीर के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहे है, कैंसर रोग बढ़ रहा है, बालक और महिलाओं में अनेक घातक रोग जन्म ले रहे है। भारत में आधे से अधिक आबादी के जीवन यापन का आधार कृषि है और कृषि की उन्नति का आधार गोवंश है। आज यह वैज्ञानिक आधार पर यह सिद्ध हो चुका है कि भारतीय नस्ल के गोवंश के मूत्र और गोबर में औषधीय गुण हैं, खेती के लिए हानिकारक कीटाणुओं को नियंत्रित करने की शक्ति है, शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। गोवंश पालन से पर्यावरण का संरक्षण और प्रदूषण नष्ट करने में सहायता मिलती है अतः भारत के समग्र विकास और देश में श्वेत क्रान्ति लाने के लिए भारतीय नस्ल के गोवंश का संवरक्षण और संवर्धन आवश्यक है, अतः (1) भारतीय नस्ल की गाय की उपेक्षा करके विदेशी नस्ल की गायों को बढ़ावा देने की प्रवृत्ति बंद हो। (2) भारतीय नस्ल के गोवंश पर समग्र वैज्ञानिक शोध प्रारम्भ हो। (3) गोमांस निर्यात पूर्णतः प्रतिबंधित हो। (4) राज्यों के बाहर गोवंश का आवागमन पूर्णतः प्रतिबन्धित हो। (5) खाद्य उत्पाद के नाम पर कत्लखानों को लाइसेंस और सभी प्रकार का शासकीय अनुदान समाप्त होना चाहिए। (6) नस्ल सुधार के बहाने से भारतीय नस्ल को विदेशी नस्ल के साथ संकरित नहीं किया जाना चाहिए। (7) भारत के काराकार व

सैनिक फार्म में गोपालन को प्रोत्साहन दिया जाये। (8) वन्य जीवों के समान ही गो–अभयारण्य बनें। खेती अलाभकारी होने के कारण ही गरीब किसान का बालक शहर की ओर पालायन कर रहा है। झुग्गी–झोपड़ी में रहने को लाचार है, बेरोजगारी बढ़ रही है। अपने देश में दूध उत्पादन हम स्वयं घटा रहे हैं और विदेशों से पावडर का दूध मंगा रहे है, इस प्रकार हम पराश्रित हो रहे है, यह देश को और गरीब कर रहा है। गोवंश का संरक्षण इन सब समस्याओं का एकमात्र निदान है। अतः भारत सरकार को इस ओर ध्यान देना चाहिए और गोवंश के वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध का कानून भारत सरकार को बनाना चाहिए। साथ ही केन्द्र व सभी राज्यों में गोसंवर्धन मंत्रालय की स्थापना हो ताकि गोवंश पर समग्र चिन्तन हो सकें।

मार्गदर्शक मण्डल देश के समस्त सन्त समुदाय एवं कथाव्यास व अन्य सामाजिक, सांस्कृतिक, श्रद्धालु समाज का आह्वान करता है कि वे गोपालन के प्रोत्साहन के लिए जन–जागरण करें तथा समाज से आग्रह है कि वह अशक्य, वृद्ध व बीमार गोवंश का घर में ही यथासंभव सेवा करें अथवा निकटतम गोशाला को सौंप दें। परन्तु किसी भी परिस्थिति में विक्रय न करे।

महाराष्ट्र और हरियाणा सरकारों ने सम्पूर्ण गोवंश हत्या को पूर्णरूप से प्रतिबंधित करते हुए कानून बनाया है, इसके लिए ये सरकारें बधाई के पात्र हैं और उत्तर प्रदेश के आगरा डिविजनल कमिश्नर द्वारा मथुरा जिला को गौशाला क्षेत्र के रूप में घोषित करने का निर्णय भी स्वागत योग्य है।

दिनांक : 25 मई, 2015

प्रस्तावक : पू0 स्वामी राघवाचार्य जी महाराज, रैवासा, राजस्थान

समर्थक : पू0 योगीराज दिव्यानन्द जी महाराज, हरियाणा

अनुमोदक : पू0 स्वामी ईश्वरदास जी महाराज, ऋषिकेश

ॐ

विश्व हिन्दू परिषद
केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल उपवेशन
प्राचीन श्रीराम मंदिर, ऋषिकेश रोड, भूपतवाला, हरिद्वार
ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी–अष्टमी, संवत् 2072 विक्रमी, 25–26 मई, 2015

प्रस्ताव क्र0–3– श्रीराम जन्मभूमि

केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल माँ गंगा के पावन तट पर इस शाश्वत सत्य की घोषणा करता है कि प्रभु श्रीराम ने जिसे धारण किया, वहीं आदर्श धर्म है, जिसे उन्होंने संस्कार प्रदान किया, वहीं हिन्दू संस्कृति है और जिसको वे आचरण में ले आये, वहीं हिन्दुओं का सदाचार बन गया। इसीलिए तो कहा गया है कि ''रामो विग्रहवान धर्मः'' अर्थात् श्रीराम धर्म के साक्षात् विग्रह है।

श्रीराम भारत की अस्मिता के प्रतीक, मर्यादा के महानायक एवं हिन्दू संस्कृति के मूर्तिमान स्वरूप है, श्रीराम के गुण अनन्त हैं, वे गम्भीरता में समुद्र, धैर्य में हिमालय, त्याग में कुबेर व क्रोध में कालाग्नि और क्षमा में पृथ्वी के समान हैं। वे ईश्वर है फिर भी उन्हें इसका अभिमान नहीं है, वे साधारण मनुष्य के समान आचरण करते हुये भी वे अधर्म से बचते हैं और धर्म की मर्यादा में स्थिर रहते हैं इसलिए सबकी दृष्टि में वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। इसी का परिणाम है कि वह जन–जन के अतःकरण में आराध्य के रूप में विराजमान है। श्रीराम से हम सबका रिश्ता जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक का है, ऐसे प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि पर उनकी गरिमा के अनुरूप भव्य मंदिर का निर्माण हम सबका पुनीत कर्त्तव्य है।

यह भी सनातन सत्य है कि काशी भगवान शंकर, मथुरा श्रीकृष्ण और अयोध्या प्रभु श्रीराम की अवतरण स्थली है। इन स्थानों पर राम, कृष्ण और शिव की गरिमा के अनुरूप भव्य मंदिरों का निर्माण आजादी के 68 वर्षों के बाद भी नहीं हो पाना हमारे लिए वेदना दायक है। इतिहास का यह भी एक कटु सत्य है कि इस्लामिक आक्रांताओं के द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों में 3000 से भी अधिक मठ–मंदिरों को ध्वस्त किया गया, हमने केवल तीन स्थानों की मांग की है। हमारी इस शालीनता को कमजोरी न माना जाए।

स्वाधीनता के पश्चात् सरदार वल्लभ भाई पटेल सरीखे देश के नेताओं ने राजनीतिक दृढ़ इच्छा शक्ति और राष्ट्रीय स्वाभिमान का परिचय देते हुये सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का निर्णय भारत सरकार के केन्द्रीय मंत्री मण्डल से करवाया था, जिसको महात्मा गांधी जी का आशीर्वाद प्राप्त था और सोमनाथ मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम में तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्वयं उपस्थित रहे थे और उन्होंने अपने संदेश में कहा था कि आज हम सोमनाथ मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के साथ–साथ अपने खोये हुये राष्ट्रीय गौरव की भी पुनर्प्रतिष्ठा कर रहे है। इस अवसर पर सम्मिलित होकर मैं गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ।

1947 के पश्चात ही दिल्ली के इण्डिया गेट से जार्ज पंचम की मूर्ति हटाई गई, दिल्ली, अयोध्या सहित सारे भारत से विक्टोरिया की मूर्ति हटाई गई, दिल्ली में विलिंगटन होस्पिटल का नाम राममनोहर लोहिया होस्पिटल और इर्विन होस्पिटल का नाम जयप्रकाश नारायण होस्पिटल,

मिंटो ब्रिज का नाम शिवाजी ब्रिज, इसी प्रकार शहरों के नाम परिवर्तन के पीछे परतंत्रता से मुक्ति पाने की भावना ही निहित है। अतः सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा प्रारम्भ की गई इस परम्परा को आगे बढ़ाने से ही देश का सम्मान संसार में बढ़ेगा।

केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल अपने संकल्प को दृढ़तापूर्वक पुनः दोहराता है कि–

* अयोध्या की सांस्कृतिक सीमा के भीतर का सम्पूर्ण क्षेत्र प्रभु श्रीराम की क्रीडा, लीला और संस्कार भूमि है। प्रतिवर्ष हजारों रामभक्त उसकी परिक्रमा करते है, इस सम्पूर्ण क्षेत्र में सैकड़ों तीर्थस्थान है। इसलिए यह सम्पूर्ण क्षेत्र हम सबके लिए वंदनीय व पूजनीय है। श्रीराम जन्मभूमि के बदले इस सम्पूर्ण क्षेत्र में किसी भी प्रकार का कोई इस्लामिक पूजा स्थान एवं सांस्कृतिक केन्द्र नहीं बनेगा और बाबर के नाम से तो सम्पूर्ण भारत में कही भी नहीं बनना चाहिए।
* आज जहाँ रामलला विराजमान है वही स्थान श्रीराम जन्मभूमि है, हमारी इस आस्था, विश्वास और श्रद्धा की पुष्टि इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ खण्डपीठ ने सितम्बर, 2010 के अपने निर्णय में भी की है। इसलिए सम्पूर्ण अधिग्रहीत क्षेत्र में भगवान श्रीराम का भव्य मंदिर का ही निर्माण होगा।
* उच्च न्यायालय द्वारा यह भी निर्णीत हो चुका है कि आज जहाँ रामलला विराजमान हैं, वहाँ 1528 ई0 के पहले एक विशाल मन्दिर था, जिसे बाबर के द्वारा तोड़ा गया। अतः भारत सरकार को 1994 में सर्वोच्च न्यायालय को दिए गए अपने वचन का पालन करना चाहिए।
* श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण के लिए 2.75 लाख गाँव में शिलापूजन के कार्यक्रमों में 6.5 करोड़ लोगों ने भाग लेकर ''श्रीराम जन्मभूमि न्यास'' द्वारा प्रस्तुत मंदिर के प्रारुप को स्वीकृति प्रदान की थी। अयोध्या स्थित कार्यशाला में इस प्रारुप के अनुरूप लगभग 60 प्रतिशत पत्थर नक्काशी करके रखा हुआ है। अतः उसी निर्धारित प्रारुप के अनुसार, श्रीराम जन्मभूमि न्यास के द्वारा और प्रारम्भ से लेकर आज तक जुड़े सन्तों के नेतृत्व में ही श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर का निर्माण होगा।
* केन्द्रीय मार्गदर्शक मण्डल निर्णय करता है कि सन्तों का एक प्रतिनिधि मण्डल भारत सरकार से सम्पर्क स्थापित कर मंदिर निर्माण में उपस्थित बाधाओं को दूर करने हेतु वार्ता करेंगा।

दिनांक : 26 मई, 2015